

संक्षिप्त परिचय

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

जिला करौली पुराने करौली राज्य तथा जयपुर राज्य की गंगपुर एवं हिण्डौन निजामतों में आता था । कल्याणपुरी नामक इस डांग बीहड़ और जंगली श्रेत्र को स्वस्थ स्वरूप प्रदान करने का पूरा श्रेय यादव वंश को जाता है। करौली राज्य मई 1949 को मत्स्य संघ में सम्मिलित हुआ एवं बाद में जयपुर राज्य के साथ मिलाकर वृहत संयुक्त राज्य राजस्थान का भाग बना। राजस्थान सरकार ने 1 मार्च 1997 को सवाईमाधोपुर जिले की पांच तहसीलों को निकाल कर एक अलग जिला करौली का गठन किया । 15 जुलाई 1997 को करौली जिला निर्माण की अधिसूचना जारी करते हुए स्वयं मुख्य मंत्री महोदय ने 19 जुलाई 1997 को इस जिले का उद्घाटन किया। राज्य की प्रमुख बड़ी नदी चम्बल इस जिले को मध्यप्रदेश के मुरेना जिले से अलग करती है । इस जिले में बहुसंख्या में पाये जाने वाले किले एवं गढ़ इसके पुराने गौरव की ओर संकेत करते हैं । इनमें से



तिमनगढ़,
ऊँटगिरी,



मण्डरायल के किलों का देश के मध्यकालीन इतिहास में प्रमुख स्थान रहा है । तिमनगढ़ के किले पर पुराने यादववंश के इतिहास की प्रभुत्ता रही है । ऐतिहासिक महापुरुषों एवं मनीषियों के नाम की अनेक छत्तरियाँ क्षेत्र में आज भी मौजूद हैं । ऐतिहासिक एवं प्राग ऐतिहासिक प्रसंगों से जुड़े टीले इस क्षेत्र में बिखरे पड़े हैं । तिमनगढ़,

करौली, हिण्डौन आदि स्थानों में पाये गये प्रारम्भिक तथा मध्ययुग के मूर्तिकला एवं वास्तुकला के नमूने पुराने समय में भव्य मन्दिरों का होना सिद्ध करते हैं । कुडगाँव की मस्जिद में एक शिलालेख मौजूद है, जिसमें इसकी स्थापना का उल्लेख है, तथा अरबी लिपि में कुरान की 'आयतें' लिखी हैं ।

भौगोलिक स्थिति एवं जलवायु

करौली अपनी भौगोलिक विशिष्टताओं के लिए भी विख्यात है। यह जिला प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर एवं अरावली पर्वत मालाओं से आच्छादित है। जिले का कुछ भाग समतल एवं कुछ भाग ऊँचा-नीचा एवं पहाड़ियों वाला है। करौली उपखण्ड को पहाड़ी इलाका कहा जाता है जबकि बाकि क्षेत्र सामान्यतया समतल एवं मैदानी है। करौली उपखण्ड का क्षेत्र, जो स्थानीय भाषा में डाँग कहलाता है, पहाड़ियों एवं नदियों से भरा पड़ा है ।

यह जिला राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित है एवं मध्यप्रदेश राज्य का समीपवर्ती जिला है । जिले के पश्चिम में दौसा, दक्षिण-पश्चिम में सवाई माधोपुर, उत्तर-पूर्व में धौलपुर तथा पश्चिम-उत्तर में भरतपुर जिले की सीमाएँ लगती हैं। यह जिला 26 डिग्री 3' से 26 डिग्री 49' उत्तर अक्षांश तथा 76 डिग्री 35' से 77 डिग्री 26' पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित है ।

जिले की सामान्य वार्षिक वर्षा 68.92 से.मी. है। जबकि वर्ष 95 में 106.44 से.मी. वर्षा रिकार्ड की गई है। जिले में औसतन 35 दिन वर्षा होती है। जिले का दैनिक अधिकतम तापमान का औसत मई माह में 49 डिग्री सेल्सियस रहता है तथा न्यूनतम 2.0 डिग्री सेल्सियस। जनवरी में रहता है।

प्रशासनिक व्यवस्था

जिले को पाँच उपखण्डों हिण्डौन, करौली, सपोटरा, मण्डरायल एवं टोडाभीम में विभाजित किया हुआ है इन उपखण्डों को 5 पंचायत समिति एवं 6 तहसीलों में क्रमशः करौली, सपोटरा, नादौती, हिण्डौन, मण्डरायल एवं टोडाभीम में विभाजित कर क्षेत्राधिकार निर्धारण किया हुआ है। जिले में तीन नगरपालिका क्रमशः करौली, हिण्डौन एवं टोडाभीम में है। जिले के प्रशासनिक स्वरूप में जनभागीदारी के रूप में एक लोकसभा सदस्य तथा चार विधानसभा सदस्य हैं, जो अपने निर्धारित कोटे से जिले के विकास में प्रशासन को सहयोग प्रदान करते हैं।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

जिले में लोगों के सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक जीवन में मेले एवं त्यौहारों का महत्वपूर्ण स्थान है। अधिकांश मौसमी एवं धार्मिक महत्व के हैं। इन मेलों का व्यापारिक, पर्यटन एवं सांस्कृतिक दृष्टि से एकता के लिए महत्वपूर्ण स्थान हैं। जिले के मुख्य मेले कैलादेवी मेला, महावीरजी, मेहन्दीपुर बालाजी एवं मदनमोहनजी के हैं, जिनमें लाखों की संख्या में दर्शनार्थी आते हैं।

भूगर्भ एवं खनिज

जिला करौली एक तरफ से चम्बल तथा तीन तरफ से मैदानों से घिरा हुआ है। इसके मैदान कैम्ब्रियन-पूर्व की आग्नेय चट्टानों तथा उनकी तलछट से बनी चट्टानों के रूपान्तरण से बने हैं। अरावली की पूर्व चट्टाने स्फटिक, अभ्रक, नाईसिस्ट, मिग्मा टाइटस आदि की बनी हुई हैं। महान विंध्य श्रेणी की चट्टाने जिनमें कैमूल, रीवा, भाण्डेर प्रमुख हैं, विभिन्न प्रकार के सलेटी पत्थर, बालू पत्थर तथा चूना पत्थर से परिपूर्ण हैं। जिला अनेक प्रकार के धात्विक एवं अधात्विक खनिजों से परिपूर्ण है। धातुओं में शीशा, ताँबा, लोहा अयस्क आदि तथा अधातुओं में चूना, पत्थर, चिकनी मिट्टी, सिलिका, सैलरूडा आदि प्रमुख रूप से पाये जाते हैं। इसके अलावा जिले में लेट्राईट, रेड ऑक्साईड, बैनेटोनाईट, बेराईट, मैगनीज मिट्टी तथा काली मिट्टी पाई जाती है। जिले में विभिन्न प्रकार की चट्टानों से मिलने वाले खनिज जैसे इमारत बनाने के पत्थर, सजावट के पत्थर आदि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। भाण्डेर श्रेणी का गुलाबी पत्थर एवं सफेद निशानों वाला पत्थर करौली एवं हिण्डौन क्षेत्रों में काफी मात्रा में पाया जाता है। सीमेन्ट श्रेणी का चूना पत्थर एवं सिलिकासैण्ड सपोटरा, नादौती क्षेत्रों में पाया जाता है।

वनस्पति, जीव जन्तु एवं वन सम्पदा

जिले में पाये जाने वाले महत्वपूर्ण पेड़ नीम, बबूल, बेरी, थोंक, रौंझ, तेन्दु, सालर, सनथा, खै, जामुन, आम, घनेरी, बॉस, खजेडा, असी, पीपल आदि हैं। इस क्षेत्रों में पाये जाने वाली जड़ी बुटियाँ आंधीझाडा, चीचडा, पोलर, कालीलम्प, लपला हैं। जिले में स्थित वनों से इमारती लकड़ी, ईंधन लकड़ी का कोयला, पशुओं के लिए चारा, घास-फूस बाड़े आदि का

सामान, तेन्दूपत्ता, गोंद, धौक के पत्ते, शहद, मोम, जडी बूटियाँ, फल, कत्था, करंज तथा दूसरी अन्य वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। जिला करौली वन्य प्राणियों के मामले में भी सम्पन्न है। इसमें विभिन्न प्रकार के वन्य जीव पाये जाते हैं। तेन्दुएँ, जंगली कुत्ता, सांभर, नील गाय, चीतल, चिंकारा, जंगली सुअर,, रीछ सामान्य रूप से पाये जाते हैं। जिले में कैलादेवी वन्य अभ्यारण्य सन 1983 में स्थापित किया गया है । जिसको सन 1991 में रणथम्भौर ट्राईवर के नजदीक लाया गया है जो एक संरक्षित वन क्षेत्रा एवं वन्य जीव अभ्यारण्य है, जिसका क्षेत्राफल 674 वर्ग कि०मी० है।

फसल पद्धति

जिले मे तीनों मौसमों में फसल की बुवाई का कार्य होता है। खरीफ वर्षा पर आधारित है। जो जुलाई माह में प्रारम्भ होता है। इसमें बोई जाने वाली मुख्य फसलें जैसे बाजरा, मक्का, तिल, ज्वार आदि हैं। रबी की बुवाई अक्टूबर से प्रारम्भ होती है, जिसमें मुख्यतया कमशः जौ, चना, गेंहूँ, सरसों की बुवाई होती है। जिले का मुख्य व्यवसाय कृषि है । भूमिगत पानी की कमी एवं सिंचाई सुविधा की कमी के कारण कृषि मुख्यतया वर्षा पर निर्भर है। कृषि विपणन के लिए जिले में दो प्रमुख मंडियाँ हिण्डौन एवं टोडाभीम है।

ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थल जिले में निम्नलिखित विशेष महत्व के स्थान है

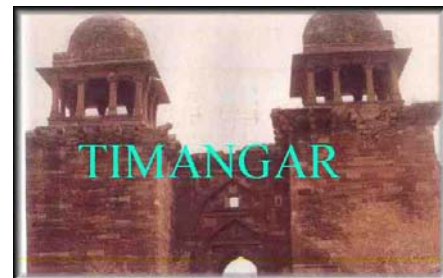
करौली शहर

करौली जिला मुख्यालय पूर्व मे इस राज्य की राजधानी थी। करौली कस्बे की स्थापना 1348 में यादववंश के राजा अर्जुनपाल ने की थी। इसका मूलतः नाम कल्याणपुरा था जो कल्याणजी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध था। इसको भद्रावती नदी के किनारे होने के कारण भद्रावती नगरी भी कहा जाता था। करौली कस्बा चारों तरफ से लाल सैण्ड स्टोन से निर्मित है, जिसकी परिधि 3.7 कि०मी० है जिसमें 6 दरवाजे 12 खिडकियाँ है। महाराज गोपालसिंह के समय का एक खूबसूरत महल है। जिसके रंगमहल एवं दीवाने आम को शीशाओं से बडी खूबसूरती से बनाया गया है। है।

इस कस्बे में काफी संख्या में मन्दिर है जिसमें प्रमुख मन्दिर मदनमोहनजी का है। यह मन्दिर सुन्दर बरामदे एवं सुसज्जित पेन्टिंग से निर्मित है तथा महाराजा गोपालसिंह जी के द्वारा जयपुर से लायी गयी काले मार्बल से निर्मित मदनमोहनजी की मूर्ति है। प्रत्येक अमावस्या को मेला लगता है ,जिसमें हजारों की संख्या में लोग दर्शनार्थ आते है। करौली में जैन मन्दिर ,जामा मस्जिद,ईदगाह आदि भी धार्मिक आस्था के स्थान है।

तिमनगढ़ का किला

यह किला जिला मुख्यालय करौली से 42 किलोमीटर दूर मासलपुर कस्बे के पास स्थित है । यहाँ बेजोड पुरात्वत संबंधी मूर्तियों की चोरी के लिए लोगों का इस पर अनवरत ध्यान बना रहता है । प्रचलित मान्यता के अनुसार सवत् 1244 में यदुवंशी शासक तिमनपाल ने इस किले का निर्माण कराया था । किले के अन्दर कई सिलालेखों, उपलब्ध प्राचीन कृतियों से पता चलता है कि इसे किसी शिल्पी व कलाप्रेमी ने बसाया था, जो बाद में शासकों के कब्जें में चला गया । किले के चारों ओर पांच



फीट मोटा तथा करीब 30 फीट ऊंचा परकोटा स्थापत्य कला का अनूठा नमूना है । किले के भीतर बाजार, फर्श, बगीची, मन्दिर , कुँए एवं तालों के अवशेष आज भी मौजूद है । पूरा किला अपने अन्दर एक पूरा नगर समेटे हुए है । प्रवेश द्वार पर अक्सर ब्रह्मा , गणेश की मूर्तियां नजर आती हैं, लेकिन यहाँ प्रेत व राक्षसों के चित्र देखने को मिलते हैं । किले में जगह जगह खण्डित मूर्तियों को देखने से ऐसा लगता है कि यहाँ मूर्तियों की बहुत बड़ी मण्डी थी । दुर्ग में छोटे छोटे कमरे भी हैं, जो संभवतः स्नानघर के काम आते होंगे ।

मण्डरायल का किला

करौली शहर से 40 किलो मीटर दूर दक्षिण पूर्व में पहाड़ों के मध्य एक आयताकार पहाड़ी के



नीचे बसी एक मध्यकालीन बस्ती है, जो दो प्रान्तों को विभक्त करते हुए चम्बल नदी के किनारे मण्डरायल नाम से जानी जाती है । ऐतिहासिक दृष्टि से एक गजियर के अनुसार यह दुर्ग यादवों के इस क्षेत्र में प्रवेश से पूर्व का है । करौली रियासत की विलेज डायरेक्ट्री में इसके निर्माणकर्ता के रूप में बीजाबहादुर को दर्शाया गया है, जिसकी कौम एवं काल का कोई जिक्र

नहीं है । किंवदंतियों के अनुसार पूर्व में इस दुर्ग पर मियां मकन का आधिपत्य होने के कारण उसी के नाम से कालान्तर में अपभ्रंश होकर दुर्ग का नाम मण्डरायल हो गया । यहां मुख्य दरवाजों के रूप में दो गोलाकार गुंबद हैं । दूसरा दरवाजा सूर्यपोल नाम है, जो रानीपुरा इलाके



भंवर विलास पैलेस



सुखविलास महल

की तरफ उतरता है । इस दरवाजों की खासियत है कि पौर से प्रातः से साय तक सूर्य का प्रकाश रहता है । इसके अन्दर एक सुरक्षित टांका ओर बाहर दो तालाब हैं । तालाब के किनारे त्रिदिव भगवान के मन्दिर ओर बारहदारी है । पूर्व में इस किले की दीवारों पर उर्दु में कुछ घटनायें लिपिबद्ध थीं , जो अब नष्ट हो चुकी हैं । इनके अतिरिक्त कबीरशाह की दरगाह, रावल का किला, सुखविलास महल एवं सपोटरा किला भी ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व के स्थान हैं ।

धार्मिक स्थल

महावीर जी

दिगम्बर जैन संप्रदाय का भारत का एक प्रमुख स्थान है । यहाँ पर भगवान महावीर की 400 वर्ष पुरानी मूर्ति है । महावीरजी में निर्मित मन्दिर आधुनिक एवं प्राचीन शिल्पकला का बेजोड नमूना है । मन्दिर को एक बहुत बड़े प्लेटफार्म पर सफेद मार्बल से बनाया गया है । इसकी छतरी दूर से दिखायी देती है जो लाल बलुआ पत्थर की है । मन्दिर पर नक्काशी का कार्य भी अति सुन्दर है । मन्दिर के ठीक सामने मान स्तम्भ बना हुआ है । जिसमें जैन तीर्थंकर की प्रतिमा है । मन्दिर के



पीछे कटला एवं चरण मन्दिर है, जहां पर दर्शनार्थी श्रद्धापूर्वक दर्शन को जाते है । प्रतिवर्ष चैत्र सुदी 11 से बैशाख सुदी 2 तक (मार्च-अप्रैल) मेला लगता है, जिसमें लाखों लोग विभिन्न क्षेत्रों से यहाँ आते है । मेले के अन्त में रथयात्रा का आयोजन किया जाता है ।

कैलादेवी मन्दिर

करौली से 24 कि०मी० दूर यह प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। जहाँ प्रतिवर्ष मार्च – अप्रैल माह मे एक बहुत बडा मेला लगता है। इस मेले में राजस्थान के अलावा दिल्ली, हरियाणा, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश के तीर्थ यात्री आते है। मुख्य मन्दिर संगमरमर से बना हुआ है जिसमें कैला (महालक्ष्मी) एवं चामुण्डा देवी की प्रतिमाएँ हैं। कैलादेवी की आठ भुजाएँ एवं सिंह पर सवारी करते हुए बताया है। यहाँ क्षेत्रीय लॉगुरियों के गीत विशेष रूप से गाये जाते है। जिसमें लागुरियों के माध्यम से कैलादेवी को अपनी भक्ति-भाव प्रदर्शित करते है।



बाला जी

यह एक छोटा सा गाँव टोडाभीम तहसील से 5 कि०मी० दूर है तथा जयपुर-आगरा राष्ट्रीय राज्यमार्ग से जुडा हुआ है। हिन्दुओ की आस्था का महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ पर पहाडी की तलहटी मे निर्मित हनुमानजी का बहुत पुराना मन्दिर है। लोग काफी दूर-दूर से यहाँ आते है। ऐसी मान्यता है कि हिस्टीरिया एवं डिलेरियम के रोगी दर्शन लाभ से स्वस्थ होकर लौटते है। होली एवं दीपावली के त्यौहार पर काफी संख्या मे लोग यहाँ दर्शन के लिए आते है।

मदनमोहन जी



श्री मदन मोहन देवालय मुख्यालय के आंचल में महलों के पास वृहद भव्य परिसर के धेरे मे स्थित है जहां भगवान राधा मदनमोहन के साथ श्रीगोपालजी की मनमोहनी प्रतिमाएं प्रतिष्ठित है। जिनकी सेवा गौड सम्प्रदायी गुसाईयों के माध्यम से बहुत सुन्दर तरीकों से होती आ रही है। मंगला से शयन तक हजारो भक्तों का समुह प्रत्येक झांकी पर उपस्थित रहता है। मदनमोहनजी की कुल आठ झांकी सकल मनोरथ पूर्ण करने वाली हैं ।

मूलरूप से इन दोनो प्रतिमाओं को उडीसा और वृदावन में प्रतिष्ठित कराया गया था। कालान्तर में यही प्रतिमाएं विभिन्न श्रोतों के माध्यम से आज इस पावन नगरी में भक्तों के वास्ते प्रेरणा की श्रोत बनी हुई है।

जिला एक दृष्टि में

भौगोलिक स्थिति	26 डिग्री 3' से 26 डिग्री 49' उत्तरी अक्षांश 76 डिग्री 35' से 77 डिग्री 26' पूर्वी देशान्तर के मध्य		
भौगोलिक क्षेत्रफल	5069.64 वर्ग किमी०	वन क्षेत्र के अन्तर्गत	1658.19 कि०मी०
समुद्रतल से ऊँचाई	400 से 600 मीटर		
तापमान	अधिकतम	49 डिग्री	न्यूनतम 2 डिग्री
जिले की औसत वर्षा	668.86 मिलीमीटर	1 जनवरी 05 से आज तक की वर्षा 555.23 मि.मी.	
भूमि उपयोग (हैक्टर में)	भौगोलिक क्षेत्रफल	505217	वन 172499
	अकृषि योग्य भूमि	19361	स्थाई चरागाह 30818
	कृषि योग्य भूमि	185871	
शुद्ध सिंचित क्षेत्र (हैक्टर में)	115076 हैक्टर		
	नहरों से	19761	तालाबों से 5471
	नलकूपों से	29320	कुएँ से 60470
	अन्य से	54	

लोक सभा क्षेत्र	करौली-धौलपुर		
विधान सभा क्षेत्र	4 (करौली, हिण्डौन, टोडाभीम, सपोटरा)		
उप खण्ड	6 (करौली, हिण्डौन, टोडाभीम, सपोटरा, मंडरायल, नादौती)		
तहसील	6 (करौली, हिण्डौन, टोडाभीम, सपोटरा, मंडरायल, नादौती)		
उप तहसील	2 (करनपुर, मासलपुर)		
पंचायत समिति	5 (करौली, हिण्डौन, टोडाभीम, सपोटरा, नादौती)		
नगरपालिका	3 (करौली, हिण्डौन, टोडाभीम)		
पटवार मंडल	254		
ग्राम पंचायत	223 (101 ग्रा.प. डांग क्षेत्र में)		
राजस्व ग्राम	889		
आवाद ग्राम	836		
मुख्य व्यवसाय	खनिज, बीड़ी उद्योग		
मुख्य नदियाँ	भद्रावती, गम्भीर, बरखेड़ा, चम्बल		
पशु गणना	1001003		
जनसंख्या	कुल	1205631	अनु. जाति 210172
	ग्रामीण	1033823	अनु. ज.जा. 213588
	शहरी	171808	
लिंग अनुपात (प्रति 1000 पु.)	846		
जनसंख्या घनत्व	218 प्रति वर्ग कि.मी.		

साक्षरता	कुल	64.59 प्रतिशत		
	महिला	45.44 प्रति.	पुरुष	80.83 प्रति.
मेले एवं त्यौहार	कैलादेवी मेला	श्री महावीर जी मेला	मदन मोहन जी का मेला	
	बाला जी का लक्ष्मी मेला	अंजनी माता का मेला		
पर्यटन स्थल	ऐतिहासिक स्थल	तिमनगढ़ का किला	मण्डरायल का किला	
	आध्यात्मिक स्थल	श्री महावीर जी	कैलादेवी	
		मदन मोहन जी का मंदिर	मेहन्दीपुर बाला जी	

पुलिस उपअधीक्षक वृत्त	4	पुलिस थाना	16
		पुलिस चौकी	16
जेल	2		